9-8-02

कोई भी समस्या में समाधान स्वरूप विजयी बनने का वायदा करो

(2 वर्ष से 15 वर्ष तक की टीचर्स बहनों की भट्ठी में)

आज बापदादा के पास अपने सर्व साथी टीचर्स की यादप्यार लेकर पहुँची तो क्या देखा कि बापदादा बहुत मधुर वरदानी स्वरूप में खड़े हैं। जैसे मैं नजदीक जाती रही तो कानों में मीठे-मीठे बोल सुनाई दे रहे थे, ''मीठे बच्चे सदा सम्पन्न, सदा विजयी दिलतख्त नशीन भव''। ऐसे शक्तिशाली स्नेहमई वरदानी बोल सुनते-सुनते उसी रूहानी नशे में मैं समीप पहुँच गई।

बापदादा बोले बच्चियों की यादप्यार लाई हो। मुझे सब बच्चियां बहुत प्यारी हैं। मैं मुस्कराती रही और सोचती रही ऐसा प्यार, इतना प्यार करेगा कौन! वाह! हम सबका भाग्य। कुछ समय बाद बाबा बोले, बापदादा इस ग्रुप को देख खुश हो रहे हैं कि कितनी छोटी-छोटी मेरी बच्चियां संसार के बन्धनों से, आकर्षणों से बचकर बाप के पास पहुँच गई है। इस ग्रुप को बापदादा अपनी भुजाओं के रूप में देख रहे हैं। जैसे शरीर में भुजायें ही सर्व कार्य में सहयोगी बनती हैं, वैसे ही यह ग्रुप भी सर्व कार्य में बाप के और निमित्त बड़ी बहनों के सहयोगी बनता है। देखो, हर सेन्टर पर हर कार्य में सहयोग के निमित्त यही बच्चियां बनती हैं। बापदादा इस ग्रुप को सहयोगी ग्रुप कहते हैं। इसलिए बहुत दिल का प्यार है। बाबा ने देखा सब बच्चियां भी बहुत उमंग-उत्साह से इस भट्ठी में आई हैं। बापदादा दिल की दुलार से कहते हैं कि अब से ऐसा परिवर्तन करो जो बड़े तो बड़े हैं लेकिन छोटे बाप समान बनके बाप को प्रत्यक्ष करने में नम्बर वन बनो। बोलो, मेरी साथी भुजायें बच्चियां, यही लक्ष्य रखा है ना! अपने दिल में पक्का वायदा करो, कोई भी बड़े ते बड़ी समस्या आवे लेकिन मैं समाधान स्वरूप बन विजयी बनूँगी।

अपने को मिटाऊंगी, बदलूंगी। यह वायदा ऐसा पक्का करो जो आपका ये वायदा नैचुरल संस्कार बन जाए। फिर और कमजोर संस्कार सब सहज समाप्त हो जायेंगे। बाप की आप बच्चों पर बहुत बड़ी दिल से उम्मीद है कि यह ग्रुप लक्ष्य और लक्षण को एक कर दिखायेंगे और इसमें इनाम लेकर दिखाओ। ऐसे कहते बाबा जैसे सबको दृष्टि दे अपने नयनों में समा रहे थे। बाबा बोले, आज विशेष बापदादा को अपनी भुजाओं पर बहुत नाज है इसलिए सब बच्चों को वतन में बुलाते हैं। फिर तो बाबा के इस संकल्प से ही सब टीचर्स इमर्ज हो गई और आटोमेटिक वी (V) के रूप में खड़ी हो गयीं। सबको दृष्टि देते बाबा बोले, आज बच्चों को बापदादा स्मृति स्वरूप बनने लिए एक विशेष सौगात देते हैं। तो क्या देखा एक सुन्दर ट्रे में भिन्न-भिन्न रंग के कमल के पुष्प थे। बापदादा ने एक-एक को अपनी मीठी दृष्टि से, दिल से वरदान देते कमल का पुष्प दिया। और हर एक अपने वी (V) के रूप में खड़े हो गये। सबके हाथ में कमल पुष्प बहुत सुन्दर सज रहा था। बाबा बोले, जानती हो बच्चियां, यह सौगात क्यों दी है? विशेष इस भट्ठी की यह शिक्षा याद रखना कि ''कोमल नहीं बनना है - कमल समान बनना है, नाज़ुक नहीं बनना है, बाप का नाम प्रत्यक्ष करना है''। हर कर्म में न्यारे और बाप के प्यारे बनना है। इसके बाद बाबा बोले, सभी अपना कमल पुष्प ऊपर उठाते दिल से यह दृढ़ संकल्प करो कि कमल पुष्प बनना है। जब सबने हाथ में कमल पुष्प उठाया तो यह दृश्य ऐसा लग रहा था जैसे कमल पुष्पों का पहाड़ बन गया। थोड़े समय के बाद यह दृश्य भी समाप्त हो गया। फिर बापदादा ने सर्व भारत के और विदेश के डबल विदेशी बच्चों को बहुत-बहुत याद दी और कहा सब बच्चों की हिम्मत उल्लास देख बापदादा हर्षित हो मुबारक दे रहे हैं। मुबारक हो, बधाई हो, बधाई हो...।

साथ में दोनों दादियों को अपने गले लगाए बाबा बोले, कि बच्चियां बाप समान पालना का, विश्व कल्याण का कार्य बहुत अच्छा कर रही है और करती रहेंगी। ऐसे समाचार देते, लेते साकार वतन पहुँच गई।